1 यूहन्ना

1 यह सृष्टि के आरम्भ से ही था:
हमने इसे सुना है,
अपनी आँखों से देखा, ध्यान से निहारा,
और इसे स्वयं अपने ही हाथों से
हमने इसे छुआ है।
हम उस वचन के विषय में बता रहे हैं जो जीवन है। 2उसी
जीवन का ज्ञान हमें कराया गया। हमने उसे देखा। हम
उसके साक्षी हैं और अब हम तुम लोगों को उसी अनन्त
जीवन की उद्घोषणा कर रहे हैं जो पिता के साथ था और
हमें जिसका बोध कराया गया। 3हमने उसे देखा है और
सुना है। अब तुम्हें भी उसी का उपदेश दे रहे हैं ताकि तुम
भी हमारे साथ सहभागिता रखो। हमारी यह सहभागिता
परम पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। 4हम
इन बातों को तुम्हें इसलिए लिख रहे हैं कि हमारा आनन्द
परिपूर्ण हो जाये।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

5हमने यीशु मसीह से जो सुसमाचार सुना है, वह यह
है: और इसे ही हम तुम्हें सुना रहे हैं: परमेश्वर प्रकाश है
और उसमें लेशमात्र भी अंधकार नहीं है। 6यदि हम कहें
कि हम उसके साझी हैं और पाप के अन्धकारपूर्ण जीवन
को जीते रहें तो हम झूठ बोल रहे हैं और सत्य का
अनुसरण नहीं कर रहे हैं। 7किन्तु यदि हम अब प्रकाश में
आगे बढ़ते हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है–तो हम
विश्वासी के रूप में एक दूसरे के सहभागी हैं। और
परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध कर
देता है।
8यदि हम कहते हैं कि हममें कोई पाप नहीं है तो हम
स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और हममें सच्चाई नहीं है।
9यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो
हमारे पापों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर विश्वसनीय
है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों से
हमें शुद्ध करता है। 10यदि हम कहते हैं कि हमने कोई पाप
नहीं किया तो हम परमेश्वर को झूठा बनाते हैं और उसका
वचन हम में नहीं है।

यीशु हमारा सहायक है

2 मेरे प्यारे पुत्र-पुत्रियों, ये बातें मैं तुम्हें इसलिए
लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई
पाप करता है तो परमेश्वर के सामने हमारे पापों का बचाव
करने वाला एक है और वह है धर्मी यीशु मसीह। 2वह एक
बलिदान है जो हमारे पापों का हरण करता है न केवल
हमारे पापों का बल्कि समूचे संसार के पापों का।
3यदि हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं तो
यही वह मार्ग है जिससे हम निश्चय करते हैं कि हमने
सचमुच उसे जान लिया है। 4यदि कोई कहता है कि, "मैं
परमेश्वर को जानता हूँ!" और उसकी आज्ञाओं का पालन
नहीं करता तो वह झूठा है। उसके मन में सत्य नहीं है।
5किन्तु यदि कोई परमेश्वर के उपदेश का पालन करता है
तो उसमें परमेश्वर के प्रेम ने परिपूर्णता पा ली है। यही वह
मार्ग है जिससे हमें निश्चय होता है कि हम परमेश्वर में
स्थित हैं: 6जो यह कहता है कि वह परमेश्वर में स्थित है,
उसे यीशु के जैसा जीवन जीना चाहिये।

सबसे प्रेम करो

7हे प्यारे मित्रो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ
बल्कि यह एक सनातन आज्ञा है, जो तुम्हें प्रारम्भ में ही दे
दी गयी थी। यह पुरानी आज्ञा वह सुसंदेश है जिसे तुम सुन
चुके हो। 8मैं तुम्हें एक और दूसरी नयी आज्ञा लिख रहा हूँ।
इस तथ्य का सत्य मसीह के जीवन में और तुम्हारे जीवनों
में उजागर हुआ है क्योंकि अन्धकार विलीन हो रहा है
और सच्चा प्रकाश तो चमक ही रहा है।

9जो कहता है, "वह प्रकाश में स्थित है और फिर भी
अपने भाई से घृणा करता है, तो वह अब तक अंधकार में
बना हुआ है। 10जो अपने भाई को प्रेम करता है, प्रकाश में
स्थित रहता है। उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे
कोई पाप में पड़े। 11किन्तु जो अपने भाई से घृणा करता है,
अँधेरे में है। वह अन्धकारपूर्ण जीवन जी रहा है। वह नहीं
जानता, वह कहाँ जा रहा है। क्योंकि अँधेरे ने उसे अंधा
बना दिया है।

12 हे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि यीशु मसीह के कारण
तुम्हारे पाप क्षमा किये गये हैं।
13 हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम, जो अनादि काल से स्थित है
उसे जानते हो।
हे युवको, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।
14 हे बच्चो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम पिता को पहचान चुके हो।
हे पिताओ, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम जो सृष्टि के
अनादि काल से स्थित है, उसे जान गये हो।
हे नौजवानो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम शक्तिशाली हो,
परमेश्वर का वचन तुम्हारे भीतर
निवास करता है और तुमने उस
दुष्ट आत्मा पर विजय पा ली है।

15संसार को अथवा सांसारिक वस्तुओं को प्रेम मत करते
रहो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसके हृदय में
परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं है 16क्योंकि इस संसार की हर
वस्तु:

जो तुम्हारे पापपूर्ण स्वभाव को आकर्षित करती है,
तुम्हारी आँखों को भाती है और इस संसार की
प्रत्येक वह वस्तु, जिस पर लोग इतना गर्व करते हैं।

परम पिता की ओर से नहीं है बल्कि वह तो सांसारिक है।
17यह संसार अपनी लालसाओं और इच्छाओं समेत विलीन
होता जा रहा है किन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा का
पालन करता है, अमर हो जाता है।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

18हे प्रिय बच्चो, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है! और जैसा
कि तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आ रहा है। सो अब
अनेक मसीह–विरोधी प्रकट हो गये हैं। इसी से हम जानते
हैं कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है। 19मसीह के विरोधी हमारे
ही भीतर से निकले हैं पर वास्तव में वे हमारे नहीं हैं
क्योंकि यदि वे सचमुच हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते।
किन्तु वे हमें छोड़ गये ताकि वे यह दिखा सकें कि उनमें से
कोई भी वास्तव में हमारा नहीं है।

20किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने आत्मा के द्वारा
अभिषेक कराया है। इसीलिये तुम सब सत्य को जानते हो।
21मैंने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को नहीं
जानते हो? बल्कि तुम तो उसे जानते हो और इसलिये भी
कि सत्य से कोई झूठ नहीं निकलता।

22किन्तु जो यह कहता है कि यीशु मसीह नहीं है, वह
झूठा है। ऐसा व्यक्ति मसीह का शत्रु है। वह तो पिता और
पुत्र दोनों को नकारता है। 23वह जो पुत्र को नकारता है,
उसके पास पिता भी नहीं है किन्तु जो पुत्र को मानता है,
वह पिता को भी मानता है।

24जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुमने अनादि काल से जो
सुना है, उसे अपने भीतर बनाये रखो। जो तुमने अनादि
काल से सुना है,यदि तुममें बना रहता है तो तुम पुत्र और
पिता दोनों में स्थित रहोगे। 25उसने हमें अनन्त जीवन प्रदान
करने का वचन दिया है।

26मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिख रहा हूँ,
जो तुम्हें छलने का जतन कर रहे हैं। 27किन्तु जहाँ तक
तुम्हारी बात है, तुममें तो उस परम पवित्र से प्राप्त अभिषेक
वर्तमान है, इसलिये तुम्हें तो आवश्यकता ही नहीं है कि
कोई तुम्हें उपदेश दे, बल्कि तुम्हें तो वह आत्मा जिससे उस
परम पवित्र ने तुम्हारा अभिषेक किया है, तुम्हें सब कुछ
सिखाती है। (और याद रखो, वही सत्य है, वह मिथ्या नहीं
है।) उसने तुम्हें जैसे सिखाया है, तुम मसीह में वैसे ही बने
रहो।

28सो प्यारे बच्चो, उसी में बने रहो ताकि जब हमें
उसका ज्ञान हो तो हम आत्मविश्वास पा सकें। और उसके
पुन: आगमन के समय हमें लज्जित न होना पड़े। 29यदि
तुम यह जानते हो कि वह नेक है तो तुम यह भी जान लो
कि वह जो धार्मिकता पर चलता है परमेश्वर की ही
सन्तान है।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

3 विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र-पुत्री कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसीलिये संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता। 2हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं कि मसीह के पुन: प्रकट होने पर हम उसी के समान हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे। 3हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र है।

4जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को तोड़ता है क्योंकि नियम का तोड़ना ही पाप है। 5तुम तो जानते ही हो कि मसीह लोगों के पापों को हरने के लिये ही प्रकट हुआ। और यह भी, कि उसमें कोई पाप नहीं है। 6जो कोई मसीह में बना रहता है, पाप नहीं करता रहता और हर कोई जो पाप करता रहता है, उसने न तो उसके दर्शन किये हैं और न ही कभी उसे जाना है।

7हे प्यारे बच्चो, तुम कहीं छले न जाओ। वह जो धर्म पूर्वक आचरण करता रहता है, धर्मी है। ठीक वैसे ही जैसे मसीह धर्मी है। 8वह जो पाप करता ही रहता है, शैतान का है क्योंकि शैतान अनादि काल से पाप करता चला आ रहा है। इसीलिये परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ कि वह शैतान के काम को नष्ट कर दे।

9जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है। 10परमेश्वर की संतान कौन है? और शैतान के बच्चे कौन से हैं? तुम उन्हें इस प्रकार जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर का नहीं है।

परस्पर प्रेम से रहो

11यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही सुना है कि हमें परस्पर प्रेम रखना चाहिये। 12हमें कैन* के जैसा नहीं बनना चाहिये जो उस दुष्टात्मा से सम्बन्धित था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। उसने अपने भाई को भला क्यों मार डाला? उसने इसलिये ऐसा किया कि उसके कर्म बुरे थे जबकि उसके भाई के कर्म धार्मिकता के।

13हे भाइयो, यदि संसार तुमसे घृणा करता है, तो अचरज मत करो। 14हमें पता है कि हम मृत्यु के पार जीवन में आ पहुँचे हैं क्योंकि हम अपने बन्धुओं से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में स्थित है। 15प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई से घृणा करता है, हत्यारा है और तुम तो जानते ही हो कि कोई हत्यारा अपनी सम्पत्ति के रूप में अनन्त जीवन को नहीं रखता। 16मसीह ने हमारे लिये अपना जीवन त्याग दिया। इसी से हम जानते हैं कि प्रेम क्या है? हमें भी अपने भाइयों के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देने चाहियें। 17सो जिसके पास भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को अभावग्रस्त देखकर भी उस पर दया नहीं करता, उसमें परमेश्वर का प्रेम है-यह कैसे कहा जा सकता है? 18हे प्यारे बच्चो, हमारा प्रेम केवल शब्दों और बातों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि वह कर्ममय और सच्चा होना चाहिए।

19इसी से हम जान लेंगे कि हम सत्य के हैं और परमेश्वर के आगे अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे। 20बुरे कामों के लिये हमारा मन जब भी हमारा निषेध करता है तो यह इसलिये होता है कि परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है और वह सब कुछ को जानता है।

21हे प्यारे बच्चो, यदि कोई बुरा काम करते समय हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराता तो परमेश्वर के सामने हमें विश्वास बना रहता है। 22और जो कुछ हम उससे माँगते हैं, उसे पाते हैं। क्योंकि हम उसके आदेशों पर चल रहे हैं और उन्हीं बातों को कर रहे हैं, जो उसे भाती हैं। 23उसका आदेश है: हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम में विश्वास रखें तथा जैसा कि उसने हमें आदेश दिया है हम एक दूसरे से प्रेम करें। 24जो उसके आदेशों का पालन करता है वह उसी में बना रहता है। और उसमें परमेश्वर का निवास रहता है। इस प्रकार, उस आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, हम यह जानते हैं कि हमारे भीतर परमेश्वर निवास करता है।

कैन कैन और अबेल आदम और हव्वा के पुत्र थे। कैन अबेल से जलता था। सो उसने उसे मार डाला। देखें उत्पत्ति 4:1-16

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 हे प्रिय मित्रो, हर आत्मा का विश्वास मत करो बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो कि वे, क्या परमात्मा के हैं? यह मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि बहुत से झूठे नबी संसार में फैले हुए हैं। 2परमेश्वर की आत्मा को तुम इस तरह पहचान सकते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि, "यीशु मसीह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया है।" वह परमेश्वर की ओर से है। 3और हर वह आत्मा जो यीशु को नहीं मानती, परमेश्वर की ओर से नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो मसीह का शत्रु है, जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आ रहा है, बल्कि अब तो वह इस संसार में ही है।

4हे प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो। इसीलिये तुमने मसीह के शत्रुओं पर विजय पा ली है। क्योंकि वह परमेश्वर जो तुममें है, संसार में रहने वाले शैतान से महान है। 5वे मसीह विरोधी लोग सांसारिक हैं। इसीलिये वे जो कुछ बोलते हैं, वह सांसारिक है और संसार ही उनकी सुनता है। 6किन्तु हम परमेश्वर के हैं सो जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है। किन्तु जो परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता। इस प्रकार से हम सत्य की आत्मा को और लोगों को भटकाने वाली आत्मा को पहचान सकते हैं।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

7हे प्यारे मित्रो, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर को जानता है। 8वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है। 9परमेश्वर ने अपना प्रेम इस प्रकार दर्शाया है: उसने अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में भेजा जिससे कि हम उसके पुत्र के द्वारा जीवन प्राप्त कर सकें। 10सच्चा प्रेम इसमें नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि इसमें है कि एक ऐसे बलिदान के रूप में जो हमारे पापों को धारण कर लेता है, उसने अपने पुत्र को भेज कर हमारे प्रति अपना प्रेम दर्शाया है।

11हे प्रिय मित्रो, यदि परमेश्वर ने इस प्रकार हम पर अपना प्रेम दिखाया है तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये। 12परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है किन्तु यदि हम आपस में प्रेम करते हैं तो परमेश्वर हममें निवास करता है और उसका प्रेम हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता है।

13इस प्रकार हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर में ही निवास करते हैं और वह हमारे भीतर रहता है। क्योंकि उसने अपनी आत्मा का कुछ अंश हमें दिया है। 14इसे हमने देखा है और हम इसके साक्षी हैं कि परम पिता ने जगत के उद्धारकर्त्ता के रूप में अपने पुत्र को भेजा है। 15यदि कोई यह मानता है कि, "यीशु परमेश्वर का पुत्र है," तो परमेश्वर उसमें निवास करता है। और वह परमेश्वर में रहने लगता है। 16सो हम जानते हैं कि हमने अपना विश्वास उस प्रेम पर टिकाया है जो परमेश्वर में हमारे लिये है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित रहता है, वह परमेश्वर में स्थित रहता है और परमेश्वर उसमें स्थित रहता है। 17हमारे विषय में इसी रूप में प्रेम सिद्ध हुआ है ताकि न्याय के दिन हमें विश्वास बना रहे। हमारा यह विश्वास इसलिये बना हुआ है कि हम इस जगत में जो जीवन जी रहे हैं, वह मसीह के जीवन जैसा है। 18प्रेम में कोई भय नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण प्रेम तो भय को भगा देता है। भय का संबन्ध तो दंड से है। सो जिसमें भय है, उसके प्रेम को अभी पूर्णता नहीं मिली है।

19हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें प्रेम किया है। 20यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर को प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है। क्योंकि अपने उस भाई को, जिसे उसने देखा है, जब वह प्रेम नहीं करता, तो परमेश्वर को जिसे उसने देखा ही नहीं है, वह प्रेम नहीं कर सकता। 21मसीह से हमें यह आदेश मिला है।

वह जो परमेश्वर को प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिये।

परमेश्वर की सन्तान संसार पर विजयी होती है

5 जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु 'मसीह' है, वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है और जो कोई परम पिता से प्रेम करता है वह उसकी सन्तान से भी प्रेम करेगा। 2इस प्रकार जब हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं तो हम जान लेते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं। 3उसके आदेशों का पालन करते हुए हम यह दर्शाते हैं

कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उसके आदेश अत्यधिक
कठोर नहीं हैं। 4क्योंकि जो कोई परमेश्वर की संतान बन
जाता है, वह जगत पर विजय पा लेता है और संसार के
ऊपर हमें जिससे विजय मिली है, वह है हमारा विश्वास।
5जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है,
वही संसार पर विजयी होता है।

परमेश्वर का कथन : अपने पुत्र के विषय में

6वह यीशु मसीह ही है जो हमारे पास जल और लहू
के साथ आया–केवल जल के साथ नहीं, बल्कि जल
और लहू के साथ। और वह आत्मा है जो उसकी साक्षी
देता है क्योंकि आत्मा ही सत्य है। 7साक्षी देने वाले तीन
हैं–8आत्मा, जल और लहू और ये तीनों साक्षियाँ एक ही
साक्षी देकर परस्पर सहमत हैं। 9जब हम मनुष्य द्वारा दी
गयी साक्षी को मानते हैं तो परमेश्वर द्वारा दी गयी साक्षी
तो और अधिक मूल्यवान है। परमेश्वर की साक्षी
का महत्त्व इसमें है कि अपने पुत्र के विषय में साक्षी
उसने दी है। 10वह जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास
रखता है, वह अपने भीतर उस साक्षी को रखता है।
परमेश्वर ने जो कहा है, उस पर जो विश्वास नहीं रखता,
वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। क्योंकि उसने उस
साक्षी का विश्वास नहीं किया है, जो परमेश्वर ने अपने
पुत्र के विषय में दी है। 11और वह साक्षी यह है: कि
परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और वह जीवन
उसके पुत्र में प्राप्त होता है। 12वह जो उसके पुत्र को
धारण करता है, उस जीवन को धारण करता है। किन्तु
जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास वह
जीवन भी नहीं है।

अब अनन्त जीवन हमारा है

13परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये बातें मैं
इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान लो कि अनन्त
जीवन तुम्हारे पास है। 14हमारा परमेश्वर में यह विश्वास है
कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार उससे विनती करें तो
वह हमारी सुनता है 15और जब हम यह जानते हैं कि वह
हमारी सुनता है–चाहे हम उससे कुछ भी माँगे तो हम यह
भी जानते हैं कि जो हमने माँगा है, वह हमारा हो चुका है।

16यदि कोई देखता है कि उसका भाई कोई ऐसा पाप
कर रहा है जिसका फल अनन्त मृत्यु नहीं है, तो उसे
अपने भाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। परमेश्वर उसे
जीवन प्रदान करेगा। मैं उनके लिये जीवन के विषय में
बात कर रहा हूँ, जो ऐसे पाप में लगे हैं, जो उन्हें अनन्त
मृत्यु तक नहीं पहुँचायेगा। ऐसा पाप भी होता है जिसका
फल मृत्यु है। मैं तुमसे ऐसे पाप के सम्बन्ध में विनती करने
को नहीं कह रहा हूँ। 17सभी बुरे काम पाप हैं। किन्तु ऐसा
पाप भी होता है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता।

18हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन गया,
वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का पुत्र उसकी
रक्षा करता रहता है।* वह दुष्ट उसका कुछ नहीं बिगाड़
पाता। 19हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। यद्यपि यह
समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है। 20किन्तु हमको पता है
कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें वह ज्ञान
दिया है ताकि हम उस परमेश्वर को जान लें जो सत्य है।
और यह कि हम उसी में स्थित हैं, जो सत्य है, क्योंकि हम
उसके पुत्र यीशु मसीह में स्थिर हैं। परम पिता ही सच्चा
परमेश्वर है और वही अनन्त जीवन है। 21हे बच्चो, अपने
आप को झूठे देवताओं से दूर रखो।

बल्कि ... रहता है शाब्दिक “जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है।” या “अपने आप को बचाए रखता है।”

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:
- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html